E: ISSN NO.: 2349-980X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

राजनैतिक नेतृत्व का सैनिक नेतृत्व पर प्रभाव तथा लोकतंत्र का विकास एवं समाजवादी समाज की उपलब्धियाँ

सारांश

राष्ट्रीय नीति ही वह आधारशिला है जिसके ऊपर सैनिक स्त्रातजी का निर्माण होता है। राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष जहाँ एक ओर वाह्य आक्रमण आन्तरिक विद्रोह के साथ आतंकवाद, गरीबी, भ्रष्टाचार, क्षेत्रीयता, स्वार्थपरता जैसी आन्तरिक समस्याएं तथा नागरिकों का सैन्य जीवन के प्रति बढ़ रही अभिरूचि घोर चिन्ता का विषय बन रहा है। लोकतांत्रिक देश होने के कारण नागरिकों की भूमिका हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। व्यस्क नागरिक ही जनप्रतिनिधियों का चयन कर संसद में भेजती है जो संसद देश की शासन व्यवस्था को संचालित करता है। सेना भी इसके (रक्षा मंत्रालय) के अधीन है। यदि राष्ट्र के नागरिक चरित्रवान, राष्ट्रभक्त हों तो वे अच्छे चरित्रवान जनप्रतिनाधियों का ही चुनाव करेंगे। ऐसी सरकार ही राष्ट्र का समग्र विकास के साथ सेना को शक्तिशाली बनाकर विश्व का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बना सकता है जिससे भारत एक सम्पूर्ण विकसित महाशक्ति राष्ट्र के रूप में विश्वमंच पर होगा।

मुख्य शब्द : राजनैतिक नेतृत्व (सरकार) का सेना पर नियंत्रण, नागरिक महत्व, सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन

अरुण सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
गाँधी पी0जी0कॉलेज,
उरई, जालौन,
उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारत में ईष्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के पश्चात कम्पनी कारोबार की सुरक्षा हेतु सुरक्षा गार्डों की भर्ती कम्पनी अधिकारियों ने की थी। इन गार्डों को बिट्रिश सरकार की सेना की सहायता से प्रशिक्षित किया गया। आगे चलकर यही गार्ड कम्पनी की सेना में परिवर्तित हो गये। इन सैनिकों को बिट्रिश सेना में परिवर्तित किया गया। इन सैनिकों के स्तर का आधार भारतीय उप महाद्वीप में बिट्रिश शासन की सुरक्षा आवश्यकताएं थी। इस सन्दर्भ में अंग्रेजों द्वारा समय–समय पर गये उन्हें प्रयासों के अन्तर्गत मुगलों की शक्ति को अंग्रेजों ने खण्डित किया। मराठों की शक्ति अफगानों ने खत्म की और जब सब एक दूसरे से लड़ रहे थे तब अंग्रेज सबको समाप्त करने में सफलता प्राप्त की।[1] देश पहले से ही हिन्दू, मुसलमान, जनजातियों एवं जातियों में विभक्त था। यह समाज ऐसे सन्तुलन पर आश्रित था जिसका आधार था सदस्यों का पारस्परिक विकर्षण और वैधानिक पार्थक्य। ऐसा देश और ऐसा समाज तो मानों विजय का पूर्व निश्चित लक्ष्य था। पूँजीवादी राष्ट्र में देश भक्ति और राष्ट्रवाद का बड़ा गहन भाव होता है। सामंती जनसमुदाय भौतिक रूप से असंतृप्त होता है। इसमें रंच मात्र भी आश्चर्य नहीं पूंजीवादी/बिट्रेन ने असंयुक्त सामंती भारत पर आसानी से विजय हासिल कर ली।

भारतीय शासकों द्वारा लड़ा गया 1857 ई0 का स्वतंत्रता संग्राम जिसमें किसानों एवं सिपाहियों ने भी ब्रिटिश ईष्ट इण्डिया के विरूद्ध लड़ाई लड़ी जिसमें अंग्रेजों की भारतीय सेना विद्रोहियों से मुकाबला करने में नाकाम रही, जिससे अंग्रेजों को इंग्लैण्ड से सेना मंगानी पड़ी।

अंग्रेजों ने आधुनिक सैन्य बल एवं संगठन के द्वारा स्थानीय राजाओं को परास्त किया। यह बिट्रिश शासन की आयातित सेना से ही सम्भव हो सका। परिणामस्वरूप कम्पनी का शासन समाप्त कर बिट्रेन ने अपने नियंत्रण में शासन

ले लिया। 1857 ई0 के विद्रोह के बाद भारतीयों की स्थिति काफी बिगड़ गयी। उनकी कृषि, शिल्पकारी एवं उद्योग धन्धे धीरे–धीरे नष्ट हो रहे थे। इस भयावह स्थिति से निकलने का कोई मार्ग न पाकर वे इसे सहज रूप से स्वीकार कर चुके थे।

''कोउ नृप होय हमें का हानी, चेरी छोड़ न होउब रानी।''[2]

इस विषम आर्थिक स्थितियों के बीच अगर उनको कोई यह बताने वाला होता कि उनकी आर्थिक विपन्नता का कारण उनका निष्क्रिय नियतिवाद है तो सम्भवतः 1857 ई0 के स्वर्ण अवसर को न चूकते।

अंग्रेजों को सम्बोधित करते हुये लार्ड क्रोमर ने लिखा था कि– ''मैं चाहता हूँ कि अंग्रेजों की नवयुवक पीढ़ी भारतीय गदर के इतिहास को पढ़े, ध्यान से देखे–सीखे और मन में पचाये यह शिक्षाओं और चेतावनी से भरा है।''[3]

अंग्रेजों ने भारतीय सिपाहियों को कभी यह अहसास नहीं होने दिया कि वे अंग्रेजी साम्राज्य के लिये महत्वपूर्ण है एवं उनके प्रति हमेशा सौतेला व्यवहार ही किया।

अंग्रेज इस बात कगो भूल ही गये कि जिस भारतीय जनता का वे शोषण कर रहे हैं, उन्हीं गरीब किसानों व मजदूरों के बीच से ही निकलकर नवयुवक सेना में भर्ती हुये हैं। उन्होने भारतीयों को सेना में सिपाही और हवलदार से ऊपर के पदों पर नियुक्तियाँ ही नहीं दी। सन् 1787 में प्लासी की लड़ाई के बाद 1857 के स्वाधीनता संग्राम तक अंग्रेज भारतीय सैनिकों की उपेक्षा करते रहे लेकिन 1857 के बाद सेनाओं के स्तर में सुधार का प्रयास किया।

प्रथम विश्व युद्ध एवं द्वितीय विश्व युद्ध में जिस प्रकार भारतीय सेना ने युद्धऋ मोर्चों पर अपनी वीरता का प्रदर्शन किया, उससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी नेतृत्व ने युद्ध के समय उनका सम्मान किया, उनके स्वाभिमान को प्रतिस्थापित किया तथा उनके प्रति अपनी आस्था प्रदर्शित की, जिससे भारतीय सैनिकों ने विपरीत मौसम में तथा प्रतिकूल संभरण के बावजूद तथा पुराने अस्त्र–शस्त्रों से ही अत्याधुनिक हथियारों से युक्त धुरी राष्ट्रों के आक्रमणकारी सैनिकों से मुकाबला किया।

अंग्रेज नेतृत्व अंग्रेजी सैनिकों को ज्यादा वेतन, देसी सिपाहियों को कम वेतन भत्ता देते थे। समान कार्य के लिये समान वेतन लागू नहीं था। यदि देशी सैनिक अपनी शान्तिपूर्ण मांग भी रखते तो उनकी कड़ी सजा मिलती थी। जहाँ विद्रोह की झलक भी दिखाई दी तुरन्त तोप से बांधकर उनको उड़ा देते थे।

इस प्रकार आतंक के द्वारा वे देशी सिपाहियों को अपने नियंत्रण में रखते थे। कैम्पबेल– ''मिलिट्री ट्रेड यूनियनिज्म'' देशी फौज के अन्दर एक तरह का फौजी नजदूरपन जाग रहा है।''[4]

भारत में ब्रिटिश सत्ता स्थापित होने के पूर्व भारत विदेशी आक्रान्ताओं का शिकार होता रहा है। सिकन्दर, गजनवी, मुकम्मद गौरी, बाबर जैसे आक्रान्ताओं के आक्रमण से भारत का सामाजिक, राजनैतिक व सैनिक स्वरूप छिन्न भिन्न होता रहा।

14 अगस्त 1947 को भारत का पूर्वी एवं पश्चिमी भाग काटकर पाकिस्तान बना दिया एवं सशस्त्र सेनाओं का बटवारा भी जाति एवं धर्म के आधार पर किया जिससे भारत को पैदल सेना की 15 यूनिट कवचित सेना 12 यूनिट तोपखाना 18 यूनिट तथा 61 रेजीमेन्ट मिले। नौसेना के 18 युद्धपोत 14 अन्य जलयान तथा नभ सेना के 7 स्क्वाड्रन मिले। जिस प्रकार बिट्रिश सेना के नीति निर्धारण बिट्रिश पार्लियामेन्ट करती थी एवं संचालन का कार्य बाइसराय के द्वारा नियुक्त रक्षा सदस्य करता था।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय सशस्त्र सेनाओं का नीति निर्धारण आदि की व्यवस्था का उत्तरदायित्व रक्षा मंत्रालय को है, जो सेना से सम्बन्धित मामलों के लिये संसद में उत्तरदायी है। वर्तमान में भारत की सेना की व्यावसायिक दक्षता किसी भी वाध्य आक्रमण से सुरक्षा के लिये पर्याप्त है एवं निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है।

स्वाधीनता प्राप्त के पश्चात अधिसंख्य भारतीय राजनीतिज्ञों द्वारा सत्ता प्राप्त हेतु की गयी मूल्यविहीन व अवसरवादी व राष्ट्रविरोधी राजनीति ने देश के सभी पहलुओं को नितान्त खोखला व संवेदनशील बना दिया है।

राष्ट्रीयता व राष्ट्रीय हितों से मुंह चुराते देश के लगभग सभी राजनीतिक दल अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु देश की सुरक्षा व गौरव की सौदेवाजी करने में जरा सा भी संकोच नहीं करते हैं। रक्षा मामलों में उदासीनता, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की निष्क्रियता, रक्षा उपकरणों के खरीदफरोक्त में दलाली, राष्ट्रीय सम्पत्ति का दुरूपयोग तथा विदेशी नीति के संचालन में प्रदर्शित राजनैतिक बौनेपन से यह पुष्ट होता जा रहा है कि देश का राजनैतिक तंत्र लक्ष्य विमुख हो गया है।

भारतीय राजनीति का हो रहा अपराधीकरण एक ऐसी चुनौती है जिसकी चिन्ता अब सभी राजनैतिक दल करने लगे हैं।

आज भारतीय जनता का विश्वास न केवल देश के राजनेताओं अपितु लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप से धीरे–धीरे हटता जा रहा है। देश में उत्पन्न हो रही यह राजनैतिक रिक्तता एक ऐसी चुनौती है जो राष्ट्रीय सशस्त्र सेनाओं को प्रभावित करती है।

सशस्त्र सेनाओं का नियंत्रण व निर्देशन जिस प्रकार राजनेताओं के पास है और वर्तमान परिस्थितियों में राजनेताओं का नैतिक क्षरण हुआ है, जिससे सेना की व्यावसायिक दक्षता प्रभावित हुयी है।

सेना को अत्याधुनिक प्रचलित हथियारों से सुसज्जित करने में नैतिक क्षरण के चलते विलम्ब होता

जा रहा है जबकि भारत पांच विदेशी आक्रमण झेल चुका है।

भारत ने पिछले युद्धों में यह अनुभव किया कि विशिष्ट समय पर कभी–कभी तीनों सेनाओं का योगदान एक साथ नहीं हो पाता जबकि उस समय उसकी नितान्त आवश्यकता होती है। पिछले 53 वर्षों से इस पर विचार चल रहा है कि तीनों सेनाओं का नियंत्रण एक ही हाथ में हो इसलिये (सी0डी0एस0) का पद सृजित किये जाने का सुझाव दिया गया लेकिन राजनैतिक अड़चन एवं सशस्त्र सेनाओं के पदाधिकारियों के मतैक्य न होने से आज भी यह समस्या हल नहीं हुई है।''[5]

आज भारतीय सशस्त्र सेनाताओं के सिपाहियों एवं अधिकारियों के बीच एक लम्बा विभेद पनपता चला जा रहा है जिसकी वजह से सैनिक अपने अधिकारियों पर आक्रमण करने लगे हैं। स्वयं भी गोलीमार कर आत्महत्या करने लगे हैं। यह दृश्य प्रेसीडेन्सी सेनाओं की यादों को ताजा कर देता है क्योंकि बिट्रिश्कालीन प्रेसीडेन्सी सेनाओं में भारतीय जवानों को सम्मान न मिलने से 1857 जैसी विद्रोह (स्वाधीनता संग्राम) जैसी घटना को अंजाम मिला था।

भारतीय सशस्त्र सेनाओं में पिछले दो दशकों से जिस प्रकार आत्महत्याओं का दौर चला है जो रूकने का नाम नहीं ले रहा है। यदि समय रहते इन सारी कमियों को सुधारा नहीं गया तो सेना की व्यावसायिक क्षमता में कमी हो सकती है।

सेना में समत्वभाव लाया जाये एवं उनको क्षेत्रवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता, जातीयता आदि विभेदकारी नीतियों से दूर रखा जाये।

एक नये भारत के उत्थान में सैन्य क्लो के सहयोग से समूचा राष्ट्र कृतज्ञ है। भारतीय सैन्य बलों को साम्प्रदायिकता के पथ पर झोंकने से बचाना होगा। भारतीय सैन्य बल राष्ट्र के प्रमुख आधारस्तम्भ है। राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है।

राष्ट्र के जीवन में नागरिक सबसे महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे राष्ट्र के चेतन तत्व है। राष्ट्र के निवासियों का चरित्र मनोबल नेतृत्व तथा प्रतिभा का मापदण्ड स्थिर करता है। ''न प्राकृतिक साधन न तकनीक न अन्य कोई तत्व केवल जनसाधारण ही किसी राष्ट्र की शक्ति के प्रमुख व निर्णायक श्रोत है।''[6]

जब नागरिक शक्ति को गुणात्मक रूप से देखा जाता है तो उसमें राष्ट्रीय चरित्र राष्ट्रीय तहस नेतृत्व कूटनीति की गुणवत्ता तथा सरकार के साधारण गुणों से सम्बन्धित है। जबकि मात्रा की दृष्टि में आवादी के मापदण्ड है।[7]

जब तक उत्पादन एवं युद्ध के लिये मनुष्यों की आवश्यकता होगी तब तक यदि अन्य तत्व समान रहे तो जिस राष्ट्र के पास इन दो कार्यों के लिये बड़ी संख्या में नागरिक होगें। वह सबसे अधिक सार्मथ्यवाद होगा।[8]

यदि राष्ट्र के नागरिक राष्ट्रभक्त है तो वह सेना में तथा अन्य क्षेत्रों में जाकर अपनी पूर्ण क्षमता से अधिक कार्य करके अपने राष्ट्र को शक्तिशाली बना लते हैं। यदि इसके विपरीत नागरिक है तो राष्ट्रीय की क्या दुर्दशा होगी। इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

नैपोलियन ने तो सम्पूर्ण फ्रान्स की जनता को सैनिक बना डाला जो एक आदेश से स्पष्ट है ''इस क्षण से उस समय तक कि हमारे शत्रु हमारे गणतंत्र से बाहर न खदेड़ दिये जायें। सभी फ्रान्स निवासी अनिवार्य रूप से स्थाई सैनिक सेवा में रत होगें। इस आदेश के अन्तर्गत युवक रणक्षेत्र में जायेगें, विवाहित पुरूष शस्त्र निर्माण तथा गोला बारूद की आपूर्ति करेगें, स्त्रियां शिविर निर्माण, सैनिक वस्त्रों की सिलाई तथा अस्पतालों में घायल सैनिकों की मरहमपट्टी करेगी, बच्चे पुराने कपड़ों की पट्टियां बनायेगें और वृद्ध पुरूष सार्वजनिक स्थलों पर जाकर सैनिकों को साहसिक कार्य के लिये प्रेरित करेगें।''[9]

भारत जब परमाणु शक्ति अर्जित करता तो उस पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिये जाते हैं। लेकिन भारतीय जनमानस हजार कठिनाईयों के बावजूद भी प्रतिबन्ध झेल जाता है, आतंकवाद के काले बादल जो आज भी जम्मू–कश्मीर और पूर्वांचल प्रान्तों में विद्यमान है। जिसने हमारी सम्पूर्ण सुरक्षा तंत्र को संवेदनशील बना दिया है। इसके अतिरिक्त नशीले पदार्थों की तश्करी, हथियारों का व्यापार, नकली मुद्रा आदि ऐसे अनेक हथकण्डे अपनाये जा रहे हैं ताकि भारत का ध्यान विकास की ओर न लग पाये केवल वह हमारी प्रदत्त समसओं को ही सुझलता रहे।

1971 के भारत–पाक युद्ध में बिट्रिश नीति के तहत अमेरिका अपन सातवां जहाजी बेड़ा लेकर हिन्दमहासागर में आ धमका एवं भारत को चेतावनी देने लगा, लेकिन भारत अपने नागरिकों एवं सेना के दम पर चेतवानी की चिंता नहीं किया। चीन भी भारत को धमकी देता रहा। वर्तमान यह केवल सैनिक क्षेत्र में ही नहीं होता बल्कि देश का कोना कोना रणभूमि में परिवर्तित हो जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी द्वारा बिट्रेन पर बमवारी, अमेरिका द्वारा हिरोशिमा, नागासाकी पर परमाणु हमला, तत्कालिक युद्ध में अमेरिका द्वारा वियतनाम पर बमबारी है। नवीन परिस्थितियों में सेना से कम महत्वूपूर्ण भूमिका नागरिकों की नहीं होती।

नागरिकों की भूमिका हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण है सेना में सैनिकों व अधिकारियों का चयन भी इन्हीं मेंसे होता है। वयस्य नागरिक ही जनप्रतिनिधियों का चुनाव कर संसद में भेजती है जो देश की शासन व्यवस्था को संचालित करता है। सेना भी इसके (रक्षा मंत्रालय) के अधीन है। यदि राष्ट्र के नागरिक चरित्रवान राष्ट्रभक्त अपने राष्ट्र को शक्तिशाली बनना चाहते होगें तो वे चरित्रवान जनप्रतिनिधियों का ही चुनाव करेगें। ऐसी

सरकार राष्ट्र का समग्र विकास कर दुनिया का श्रेष्ठ राष्ट्र बन सकता है।

राष्ट्रीय नीति ही वह आधारशिला है जिसके ऊपर सैनिक स्तात्रजवी का निर्माण होता है। नूतन विश्वव्यवस्था के वर्तमान परिदृश्य में भारतीय सुरक्षा की आन्तरिक व वाह्य चुनौतियों से उसके रक्षा परिवेश व रक्षा चिन्तन के समक्ष नये आयाम उत्पन्न हो गये हैं। एक ओर जहां आतंकवाद, गरीबी, भ्रष्टाचार क्षेत्रीयता व स्वार्थपरता जैसे आनतरिक समस्यायें भारतीय सुरक्षा को विषाक्त कर रही है।[10]

प्रजातांत्रिक देश घोषित होने पर सभी को अपने व्यवसाय की चुनाव करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी है। स्वतंत्रता के प्रारम्भि दिनों में राष्ट्रभक्ति की भावना आदि के कारण सैन्य व्यवसाय अपनाने में किसी को कोई विशेष मानसिक मंथन नहीं करना पड़ता था। लेकिन सैन्य जीवन की कठोरता एवं जोखिम भरा हरपल तथा पारतोषित में कमी एवं युद्ध में वीरगति तथा घायल होकर विकलांग बनाना तथा युद्धबन्दी बनकर अनेकों प्रकार की यातनायें सहना एवं जीवन गुमनामी में दफन हो जाना ये सैनिक जीवन की साधारण घटनायें होती है। इसके अतिरिक्त अवकाश में अनियमितता के कारण पारिवारिक व सामाजिक जिम्मेदारी को निभा पाने में असमर्थ हो जाता है जिसके कारण सैनिक जीवन अपनाने के लिये लोग उदासीन होते जा रहे हैं।

भारत में बढ़ रही आबादी (एक मिनट में 45) बच्चे पैदा होते हैं, के कारण आज प्रत्येक क्षेत्र में बेरोजगारी की बाढ़ सी आ गयी है। जिस प्रकार प्रारम्भिक काल में निर्धन व्यक्ति ही सेना में सिपाही बनाये जाते थे। उसी प्रकार आज भी कमजोर वर्ग के लोग ही सैनिक बन रहे हैं। पहले कुलीन वर्ग के लोग ही अधिकारी बनते थे। आज भी मध्यम वर्ग के लोग ही सेना में अधिकारी परीक्षा पास कर सेना में अधिकारी बनते हैं लेकिन उच्च वर्ग (उद्योगपति, पूंजीपति) के लोग सेना के व्यवसाय को अपनाना पसन्द नहीं करते।

वर्तमान में वैश्वीकरण का दौर चल रहा है जिसेस सम्पूर्ण विश्व एक ही परिधि में आ गया है।11 मध्यम वर्ग सैन्य अधिकारी की अपेक्षा डॉक्टर, इन्जीनियर, प्राईवेट कम्पनियों के अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी आदि व्यवसायों को अपनाना पसन्द करने लगा है लेकिन निर्धन वर्ग सैन्य व्यवसाय रोजगार का एक अच्छा अवसर मानकर चलते हैं लेकिन बाद में कुछ महत्वाकांक्षी सैनिक अवसाद के शिकार होकर आत्महत्यायें कर लेते हैं। आज तीव्र आर्थिक दौर ने नैतिकता का जो क्षरण किया है। उससे सेना भी अछूती नहीं है। जिसके कारण सेना में भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला है। जिस प्रकार सेना के प्रारम्भिक चरण में सैनिक मौका पाते ही अपने नागरिकों को लूट लेते थे एवं दुश्मन से जा मिलते थे। उसी का नवीन रूप सेना में यदा कदा सामने आ रहा है। देश की प्रतिरक्षा योजनाओं को भी बेचने में जरा सा भी हृदय में पश्चाताप नहीं होता। सेना ऐसी परिस्थितियों से गुजर रही है जो राष्ट्र की सम्प्रभुता के लिये किसी भी समय समस्या उत्पन्न हो सकती है। अतः सैन्य व्यवसाय को एक सामाजिक व्यवसाय न माना जाये। राष्ट्र की सुरक्षा के लिये कुछ समय के लिये प्रत्येक नागरिक के लिये सैन्य सेवा अनिसार्य बनाया जाये एवं उनमें नैतिक संचेतना पैदा की जाये जिससे सेना की व्यावसायिक दक्षता बढ़ाने के साथ भ्रष्टाचार को समाप्त किया जा सकता है एवं सैन्य व्यवसाय की प्रतिष्ठा में वृद्धि की जा सकती है जिससे भारत एक सम्पूर्ण विकसित महाशक्ति राष्ट्र के रूप में विश्व मंच पर होगा और विश्व में

सर्वे भवन्ति सुखनः
सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
माँ कश्चित दुःख भागभवेत्।

निष्कर्ष

प्रथम विश्व युद्ध एवं द्वितीय विश्व युद्ध में जिस प्रकार भारतीय सेना ने युद्ध मोर्चों पर अपनी वीरता का प्रदर्शन किया उससे स्पष्ट होता है कि तात्कालिक सरकार (अंग्रेज) ने युद्ध के समय उनका सम्मान किया तथा उनके स्वाभिमान को प्रतिस्थापित किया तथा उनके प्रति अपनी आस्था प्रकट की। परिणामस्वरूप भारतीय सेना ने विपरीत मौसम में तथा प्रतिकूल सम्भरण के बावजूद एवं पुराने अस्त्र–शस्त्रों से ही अत्याधुनिक हथियारों से युक्त धुरी राष्ट्रों के आक्रमणकारी सेना से मुकाबला किया।

विश्व युद्ध समाप्त होने के पश्चात अंग्रेज सरकार पुनः सेना में विभेदकारी नीति का अनुशरण किया। परिणामस्वरूप सेना में पुनः असन्तोष एवं विद्रोह की भावना व्याप्त हो गयी और स्वाधीनता संग्राम के सिपाहियों का समर्थक बन गयी आदि अनेक कारणों से ब्रिटिश शासन समाप्त हो गया। 15 अगस्त 1947 को भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया। स्वतंत्रता के पश्चात सेना का नियंत्रण भारत सरकार पर, जिसका प्रमुख सेनापति राष्ट्रपति होता है। सेना रक्षा मंत्रालय के अधीन जिसका प्रमुख रक्षामंत्री होता। वर्तमान में भारत की सेना की व्यावसायिक दक्षता कीस भी आन्तरिक एवं वाह्य खतरों से सुरक्षा के लिये पर्याप्त है एवं निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है।

इसी क्रम में कुछ भारतीय राजनीतिज्ञों द्वारा सत्ता प्राप्त हेतु की गयी मूल्यविहीन व अवसरवादी व राष्ट्रविरोधी राजनीतिज्ञों ने देश के सभी पहलुओं को नितान्त खोखला व संवेदनशील बना दिया है। रक्षा मामलों में उदासीनता, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की निष्क्रियता, रक्षा उपकरणों के खरीद फरोक्त में दलाली एवं राष्ट्रीय सम्पत्ति का दुरूपयोग तथा विदेश नीति के संचालन में

प्रदशित राजनैतिक बौनेपन से यह पुष्ट होता जा रहा है कि देश का राजनैतिक तंत्र लक्ष्य विमुख हो गया है।

भारतीय राजनीति का हो रहा अपराधीकरण की ऐसी चुनौती है जिसकी चिन्ता अब सम्पूर्ण देश करने लगा है। आज भारतीय जनता का विश्वास न केवल देश के राजनेताओं अपितु लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप से धीरे–धीरे हटता जा रहा है। देश में उत्पन्न हो रही यह राजनैतिक रिक्तता एक ऐसी चुनौती है जो राष्ट्रीय सशस्त्र सेनाओं को प्रभावित कर रही है।

सशस्त्र सेनाओं का नियंत्रण व निर्देशन जिस प्रकार सरकार (राजनेताओं) के पास है और राजनेताओं का नैतिक क्षरण हुआ है जिससे सेना की व्यावसायिक दक्षता प्रभावित हुयी है। भारत में स्वतंत्रता के बाद से अब तक 1962 ई0 में चीन एवं अनेकों बार पाकिस्तान ने आक्रमण किया। पाकिस्तान द्वारा अघोषित युद्ध तो निरन्तर चल रहा है।

जो राष्ट्र की सम्प्रभता के लिये किसी भी समय समस्या उत्पन्न हो सकती है। राष्ट्र की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये सैन्य व्यवसाय को एक सामाजिक व्यवसाय न माना जाये। राष्ट्र की सुरक्षा के लिये प्रत्येक युवा नागरिक के लिये सैनय सेवा कुछ समय के लिये अनिवार्य बनाया जाये जिससे सेना की व्यावसायिक दक्षता बढ़ाने के साथ भ्रष्टाचार को समाप्त किया जा सकता है एवं सैन्य सेवा की प्रतिष्ठा में वृद्धि की जा सकती है और भारत विश्व की महाशक्ति बन जायेगा।

अंत टिप्पणी

1. *डॉ0 एम0सी0 जोसी– 'स्वतंत्रता आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास' अभिव्यक्ति प्रकाशन इलाहाबाद (प्रयागराज) 1999 पृ0सं0 09*
2. *रामचरित मानस*
3. *सामयिक सामाजिक चिन्तन, अंक 1–2 वर्ष 1991 अक्टूबर दिसम्बर– भारीय सामाजिक विज्ञान अकादमी पृष्ठ संख्या 62–63*
4. *रक्षार्थ वैल्यूम–3 नं0 3–4 इलाहाबाद विश्वविद्यालय 2001 पृ0 67*
5. *हंस, जे0 मारगेन्थो– पोलिटिक्स एमंगनेशन (तीसरा संस्करण), पृ0सं0 192*
6. *डॉ0 बी0एल0 फडिया, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन आगरा, पृ0 सं0 127*
7. *डॉ0 योगेन्द्र कुमार शर्मा, सैन्य विचारक, 'अलका प्रकाशन' कानपुर 1938 पृ0सं0 94*
8. *सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, 'भारत सरकार' आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां, 11 दिसम्बर 2006 पृ0सं0 (02–03–04)*
9. *कुरूक्षेत्र वर्ष 53, अंक–9, जुलाई 2007 पृ0सं0 02*
10. *स्ट्रैटजिक एनालसिस वैल्यूम ग्प छर जनवरी 1990, पृ0सं0 996*